प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध कार्य का विषय है "कमलेश्वर के कथा साहित्य में निरूपित विविध आयाम: एक अध्ययन"।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध आठ अध्यायों में विभक्त है। जिसमें प्रथम अध्याय है- कमलेश्वर जीवनवृत्त व कृतित्व। इस अध्याय के अंतर्गत कमलेश्वर के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। कमलेश्वर का व्यक्तित्व बहुआयामी व्यक्तित्व है। वे एक सफल कहानीकार, उपन्यासकार, संपादक, संवाद व पटकथा लेखक, आलोचक इत्यादि कई रूपों में वे सफलता अर्जित करते है। तथा इन सब रूपों के योग से निर्मित कमलेश्वर का व्यक्तित्व एक संयुक्त व्यक्तित्व है। लेकिन एक साहित्यकार के रूप में वे स्वयं को मूलतः कहानीकार मानते है। साहित्यिक दृष्टि से भी वे अत्यंत सफल व समृद्ध है। इनके साहित्य में सामान्य जनजीवन का यथार्थचित्रण प्राप्त होता है। वे अपने विचार तथा लेखकीय दायित्व से बद्ध प्रतिबद्ध साहित्यकार है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत "कमलेश्वर के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन व सामाजिक विसंगतियाँ" का विश्लेषण किया गया है। इनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदियाँ, उसकी विसंगतियाँ, उसका तनाव, उसकी टूटन, घुटन, अकेलापन आदि का प्रामाणिक चित्रण इनके उपन्यासों में मिलता है।

तृतीय अध्याय में "कमलेश्वर के कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन व सामाजिक विसंगतियाँ" का अध्ययन किया गया है। कमलेश्वर की कहानियाँ आदर्श व कल्पना से दूर जीवन यथार्थ की कहानियाँ है। अपने आस पास की घटनाएं कमलेश्वर की कहानियों की विषयवस्तु है। जीवन को बिना किसी दुराव-छिपाव के भोगता हुआ मनुष्य उनकी कहानियों का पात्र है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत "कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व"। कमलेश्वर जिस दौर के लेखक है, वह दौर आधुनिकता व परंपरा के मध्य गहरी होड का समय है। समाज इन दोनों तरह की जीवन पद्धतियों के आगोश में था। जहां एक तरफ आधुनिकता की पकड़ मजबूत हो रही थी, वही परंपरागत जीवनधारा जीवन से पीछे छूट रही थी। इस तरह से समाज इन दोनों के द्वन्द्व में था। जिसका चित्रण उपन्यासों के मध्य कमलेश्वर ने किया है।

पंचम अध्याय में "कमलेश्वर के कहानियों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व"। उपन्यास की भांति कमलेश्वर अपनी कहानियों में भी आधुनिकता व परंपरा के द्वन्द्व को प्रस्तुत किया है।

इस अध्याय के अंतर्गत इनकी कहानियों में वर्णित आधुनिकता व परंपरा का विश्लेषण किया गया है।

षष्ठ अध्याय में "कमलेश्वर विभाजन की त्रासदी"। विभाजन की समस्या को केंद्र में रखकर हिन्दी साहित्य में कई उपन्यासों व कहानियों का लेखन कार्य किया जा चुका है। चूंकि कमलेश्वर का समय विभाजन का समय है। और इसके दौरान जो अमानवीयता, जो पशुता समाज में फैली वह मनुष्य व मनुष्य समाज के लिए अत्यंत घातक है। विभाजन के दौरान इससे प्रभावित क्षेत्र में बर्बर पशुता का जन्म हुआ। इन मुद्दों को केंद्र में रखकर कमलेश्वर ने विश्व प्रसिद्ध उपन्यास कितने पाकिस्तान की रचना की।

सप्तम अध्याय में "कमलेश्वर का नारी विषयक दृष्टिकोण"। आज का समय विमर्शों का समय है। साहित्य में कई तरह के विमर्श चल रहे है। इस आधार पर हमने कमलेश्वर के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श को तलाशने की कोशिश की है। और इस अध्याय के अंतर्गत यह देखने की कोशिश की है कि, कमलेश्वर के स्त्री संबंधी विचार व मान्यताएं क्या व कैसी थी।

अष्टम व अंतिम अध्याय के अंतर्गत "कमलेश्वर भाषा व शिल्प" का अध्ययन किया गया है। भाषा साहित्य का प्राण होती है, जिसकी भाषा जितनी सरल होती है उसके पाठकवर्ग उससे उतने अधिक प्रभावित होते है। विचारों को व्यवस्थित करने का कार्य भाषा व शिल्प का है। विचारों को किस भाषा व किस शिल्प में रखा जाए। यह कार्य एक लेखक के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण होता है। कमलेश्वर के साहित्य का अध्ययन करते हुए हमने पाया कि कमलेश्वर की भाषा अत्यंत सरल, सरस व प्रभावशाली भाषा है। तथा शिल्प विधाओं के अनुरूप अत्यंत कसा हुआ है।

अंत में उपसंहार देते हुए शोध प्रबंध "कमलेश्वर के कथा साहित्य में निरूपित विविध आयाम: एक अध्ययन" संबंधी मान्यताओं एवं स्थापनाओं को प्रतिस्थापित करने का विनम्र प्रयास किया गया है। तथा शोध कार्य के महत्त्वपूर्ण बिन्दुयों को अत्यंत संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उपसंहार के पश्चात संदर्भ ग्रंथ सूची प्रस्तुत किया गया है। जिसके अंतर्गत आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ व पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

शोध-प्रबंध एक साधना का प्रतिफल है। जो माता-पिता के आशीष तथा भाई-बहनों के सहयोग, साहचर्य तथा उनके हौसलों व त्याग के बिना यह कार्य असंभव था। लेकिन हर पल उनका मेरे साथ खड़े रहना ही मेरी सामर्थ है। और इस समर्पण का ही प्रतिफल यह शोध कार्य है। उनके त्याग व समर्पण के समक्ष आभार बहुत बौना शब्द है। लेकिन इसके अलावा अभी मेरे पास

कोई पूंजी नहीं है। अतः हम पूज्य माता-पिता व प्यारे भाई-बहनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

सरल एवं उदार, मौलिक चिंतन से परिपूर्ण, सहृदय परम आदरणीय शोध निर्देशक डॉ. मोहम्मद अज़हर ढेरिवाला के स्नेह, वात्सल्य व अनुशासन की त्रिवेणी में यह कठिन साधना संपन्न हो सकी। इसके लिए मैं सर के प्रति आत्मीय कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। सर का कुशल मार्गदर्शन ही मेरी पूंजी है। सर का आत्मीय लगाव व सुझाव इस कार्य को करते रहने की निरंतर प्रेरणा देता रहा। सर का असीमित स्नेह व आशीर्वाद मिलता रहा है और भविष्य में यह स्नेह व आशीर्वाद मिलता रहे, ऐसी कमाना करता हूँ।

इसके साथ ही मैं आत्मीय आभार प्रकट करता हूँ, हिन्दी विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दक्षा मिस्त्री मैम का जिनके कार्यकाल के दौरान शोधकार्य के लिए पंजीकरण हुआ, तथा वर्तमान हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. कल्पना गवाली मैम का जिनके कार्यकाल में शोधकार्य शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत हुआ। विभाग के अन्य गुरुजनों में आचार्य ओम प्रकाश यादव, प्रो. लता सुमंत, प्रो. शन्नो पाण्डेय, प्रो. कानुभाई निनामा, प्रो. दीपेन्द्र सिंह जाडेजा, डॉ. एन. एस. परमार, डॉ. मनीषा ठक्कर, डॉ. एम. पी. पाण्डेय एवं डॉ. अनीता शुक्ल का समय-समय पर मार्गदर्शन व सहयोग मिलता रहा। अतः आदरणीय सभी गुरुजनों का भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

इसके साथ ही मैं आत्मीय आभार प्रकट करता हूँ, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के आचार्य शिव प्रसाद शुक्ला सर का। सर के सहयोग से ही मैं यहा तक पहुँच सका। साथ ही मैं आभार प्रकट करता हूँ, बड़े भैया आदरणीय डॉ. सुनील कुमार यादव, मंगलेश कुमार यादव व श्याम सुंदर यादव व उदय बहादुर यादव व शैलेश कुमार यादव का जिनका सहयोग व मार्गदर्शन हमेशा आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देता है।

यह कार्य मित्रों के सहयोग के बिना संभव नहीं था। जीवन के सम-विषम परिस्थितियों में साथ देने वाले प्रिय मित्र राहुल कुमार, आशुतोष कुमार, धनंजय कुमार, तथा विभाग के साथियों में हम सबके प्रिय डॉ. ईश्वर भाई, क्षेत्र सिंह, वीरेंद्र सिंह, सुनील कुमार, जितेंद्र भाई, अतुल भाई व प्रिय छोटे भाई सागर का विशेष सहयोग मिलता रहा। साथ ही विभाग के अन्य साथियों का सहयोग मिलता रहा। इस सहयोग के लिए हम सभी मित्रों के प्रति आत्मीय आभार प्रकट करते है।

अंत में मैं प्रकृति की सभी चराचर शक्तियों को नमन करते हुए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग देने वाले अपने सभी शुभचिंतकों, गुरुजनों, सहयोगियों, एवं परिजनों के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने मुझे निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी।

पुस्तक व पुस्तकालय के बिना शोध कार्य की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। शोध कार्य में पुस्तकालयों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः मैं महाराजा सायजीराव विश्वविद्यालय के पुस्तकालय हंसा मेहता, इलाहाबाद विश्वविद्यालय का केन्द्रीय पुस्तकालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागराज, दिल्ली विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय एवं जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। जहां से मुझे दुर्लभ शोध सामग्री प्राप्त हुई। और हम शोध कार्य पूर्ण कर सके। इसके अतिरिक्त मैं उन सभी विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनकी कृतियों का किसी न किसी रूप में हमने अपने इस कार्य के लिए सहारा लिया है।

यह शोध कार्य महाराजा सायजीराव विश्वविद्यालय के तपस्थली प्रांगण में पूर्ण हुआ। इसके लिए हम विश्वविद्यालय व विश्वविद्यालय परिवार के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते है।

शोध जिज्ञासा का विषय होता है। और जिज्ञासा की बेचैनी शोधार्थी को शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रेरित करती रहती है। जिज्ञासा की बेचैनी का प्रतिफल शोध कार्य की परिणिती होती है। अंततः “कमलेश्वर के कथा साहित्य में निरूपित विविध आयाम: एक अध्ययन” शोध-प्रबंध विद्वतजनों के सम्मुख अपनी मर्यादाओं के साथ प्रस्तुत है। जो अपनी सीमाओं में बद्ध है। जिसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो हमें विनत भाव से स्वीकार्य है।

तिथि

16/07/2023

विनीत

शिव कैलाश यादव